७

गोंधली समाज और लोकगीत

डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, स्तानक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड.

गोंधली जनजाति यह एक घुमन्तु अवस्था में भटकनेवाली देवियों की आराधना करनेवाली एक उपासक जनजाति मानी जातीहै। इस जनजाति का इतिहास प्राचीनकालसे देखनेको मिलता है। यह जनजाति मुख्यत: तुलजापूरकी तुळजाभवानी और माहुरकी रेणुकामाताकी उपासना करतीहै। इस जाति का चित्रण इ.स. पूर्व 1000 साल से देखनेको मिलता है।महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश एवं भारत के विभिन्न क्षेत्र में निवास करतीहै। इस जनजाति की जनसंख्या हरक्षेत्र मेंकमआधिकमात्रा में पाई जातीहै। यह जनजाति अन्य घुमन्तू जनजातियोंके समान व्यवहार नहीकरती. बल्कि हिंदु मराठा समाज के समान व्यवहार करतीहै। गोंधली जनजाति के लोग रेणुकामाता, भवानीमाता, यमाई, मरियामा, जगदंबा, दुर्गामाता, अंबाई, योगेश्वरी तथा अन्य देवियों की आराधनाकरतीहै। यह जनजाति देवियों की लोकउपासक जनजाति कहलातीहै। यह लोगकुलाचारके रूप में देवियों के नाम गोंधल विधि करतेहै। गोंधल विधि समाज में सामाजिक और धार्मिक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण विधि मानी जातीहै। यह जनजाति एक घुमन्तु जनजाति है इस जनजाति के स्वरूप परप्रकाश डालतेहुए डॉ.मांडे प्रभाकर लिखतेहै- "गोंधळीही देवीच्या भगताची भटक्याचे जीवन जगणारी एक जात आहे.गोंधळी जातीचे लोक देवीच्या उपासनेच्या स्वरूपाचा एककुलाचार पार पाडतात.त्यालाच गोंधळ असे म्हणतात.गोंधळी जातिचे लोकचंगोंधळहे विधिनाट्य सादरकरू शकतात.या जातीचे लोक महाराष्ट्रात, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश या प्रांतात विशेष करून आढळतात."1 यह जनजाति अपनी लोकसंस्कृतिके अनुरूप आज भी परंपरावादी जीवन यापन करतीहै। देवियों कागोंधल विधि संपन्न करनेकी पंरपराका चित्रण अनेक प्राचीनग्रंथो में मिलता है। 'रेणुका महात्म्य' इस ग्रंथ मेंगोंधल विधि औरगोंधलीका चित्रण मिलता है। दिनकर स्वामी तिसगांवकर ने स्वानुभव दिनकर ग्रंथ मेंगोंधल विधि की व्युत्पत्ति के संदर्भ में चित्रण कियाहै।

"सहस्त्रार्जुने मायाबापा गांजिले।
मातृशरीरी येकवीस घाय केले।
म्हणोनि येकवीस वेळा निक्षत्रीकेले।
महिमंडल फारशरामें
आणि सहस्त्रार्जुन सपरिवारी मारिला।
त्याचिया धडाचा चौंडकाकेला।
मातापूरी फरशरामेंगोंधळ घातला
ये माये, ये माये, बोभाईले।।"2

गोंधली लोकगीतोंका उद्‌भव

गोंधली जनजाति के लोगगीतोंका उद्‌भव प्राचीनकालसे माना जाता है। मानव ने जब से भाषा सीखीतभी से लोगगीतोंका प्रचलन हुआ। लाकगीत एक पीढीसे दूसरी पीढीतक मौखिक रूपसे आतेहै। लोकगीतोंका रचियता अज्ञात होताहै। इस जनजाति का उद्‌भव प्राचीनकालकेग्रंथो, पुराणों, वेदों, उपनिषदोंसेहुआहै। यह जनजाति देवी पूजकहोनेकेकारणगोंधल विधि कियाकरतीहैं। गोंधल विधि में लोकगीतगाये जातेहैं। लोकगीतोंकेबिना गोंधल विधि का प्रारंभ गण से किया जाता है। 'गणगानेकी परंपरा अतिप्राचीनहै इसलिए इस जनजाति के लोगगीतोंकी पंरपरा अतिप्राचीनहै। देवियों केगोंधल विधि में गण इसप्रकार गाया जाता है। "सातीसर्मीदरा, गोंधळा ये,

Scanned by CamScanner